Shri Swaran Singh: If he mentions any Minister's name or the time, I shall check that up.

श्री हुकम चन्द कछवाय : असम के मुख्य मन्त्री जी ने दिया है ।

आकाशवाणी की भाषा-नीति

+

*926. **श्री म० ला० द्विवेदी :**
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री ल० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री दलजीत सिंह :

क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भूतपूर्व सूचना और प्रसारण मन्त्री के समय में आकाशवाणी में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने के लिये श्री श्रीप्रकाश के सभापतित्व में बनाई गई समिति के प्रतिवेदन में क्या-क्या मुख्य सिफारिशें की गई हैं ;

(ख) क्या उस प्रतिवेदन की एक प्रति सभा पटल पर रखी जायेगी;

(ग) क्या यह सच है कि उपरोक्त समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत होने के पश्चात् आकाशवाणी की भाषा सम्बन्धी नीति में तथा प्रसारणों में प्रयुक्त की जाने वाली शब्दावली में बहुत से परिवर्तन किये गये हैं; और

(घ) आकाशवाणी की भाषा-नीति में समय-समय पर परिवर्तन करने और उसके लिये कोई स्थायी नीति न बनाये जाने के क्या कारण हैं ?

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उप-मंत्री (श्रीमती नन्दिनी सत्पथी) : (क) समिति ने कोई बाकायदा रिपोर्ट नहीं दी थी। उसने अपनी सात बैठकों के दौरान कुछ सिफारिशें की थीं । मुख्य सिफारिशों के सम्बन्ध में एक नोट सभा पटल पर रखा गया **[पुस्तकालय में रखा । देखिये संख्या एल० टी०—5966/66]**

(ख) तथा (ग). प्रश्न नहीं उठते ।

(ग) जी, नहीं ।

श्री म० ला० द्विवेदी : अध्यक्ष महोदय, मैंने प्रश्न करते वक्त मन्त्री महोदय से प्रार्थना की थी कि इस प्रतिवेदन की एक नकल यहां पर रखी जाय, लेकिन उसके बदले चन्द सिफारिशें ही रखी गई हैं । मैं यह जानना चाहता हूं कि उस रिपोर्ट को क्यों नहीं रखा गया ?

Shrimati Nandini Satpati: There was no report; there were only recommendations which I have put on the Table of the House.

Shri M. L. Dwivedi: That has not been placed on the Table. Therefore, I am putting this question.

Mr. Speaker: She says that it has been put on the Table of the House. He might now put his second question.

Shri M. L. Dwivedi: Only some recommendations and not all.

Mr. Speaker: She says that there was no report.

He might put his second question now.

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं जानना चाहता हूं कि इस समिति ने कुल कितने दिन काम किया, और उसके सुझावों के अनुसार उसने जो काम किया, जो ग्लोसरी तैयार की, वह क्या है और क्या वह इस सदन में रखी जायगी ?

Shrimati Nandini Satpati: The Committee worked for two years from October 1962 to October 1964 and the recommendations are being looked into.

श्री म० ला० द्विवेदी : मैंने पूछा था कि क्या उसने कोई ग्लोसरी तैयार की है, यदि की है तो क्या वह सदन में रखी जायगी ।

The Minister of Information and Broadcasting (Shri Raj Bahadur): There is a glossary prepared by AIR consisting of about a thousand words, but not by the committee as such.

Shri P. C. Borooah: Since language is a developing thing, may I know whether Government have under contemplation the constitution of a standing committee of the Members of Parliament and other language experts to review the question of the language to be used by AIR from time to time in the light of the public opinion?

Shri Raj Bahadur: The House may remember that the Sri Prakasa Committee was set up in pursuance of the recommendations made by a committee composed of the Members of Parliament, and I think that that was the main purpose behind the Sri Prakasa Committee. Otherwise, the hon. Member's question is a suggestion for action.

श्री भागवत झा आजाद : क्या आकाशवाणी की भाषा भी इस आधार पर चलाई जाती है, कि भाषा का क्रमिक विकास हो, क्या वह सरकार की नीति है या मन्त्री महोदय या बड़े-बड़े अधिकारियों या महाअधीक्षक की ? अगर यह सरकार की नीति है तो बड़े महाअधीक्षक या बड़े व्यक्तियों के आने से वह बदल क्यों जाती है ?

श्री राज बहादुर : जो नीति इस सम्बन्ध में चल रही है, वह वही नीति है जिसका वर्णन हमारे संविधान में है । उसके अन्तर्गत उस नीति का स्पष्टीकरण हो सकता है लेकिन नीति में कोई परिवर्तन या हेर फेर नहीं हो सकता ।

Shri S. C. Samanta: May I know whether according to the observations made by the committee, common words having Sanskrit origin in different languages have been collected, selected and used in AIR, and if so, the reactions of the listeners?

Shri Raj Bahadur: The attempt has been to have common words not merely from the Sanskrit language but from all other sources as well, and that has been done in respect of about a thousand words.

श्री म० ला० विद्यालंकार : क्या श्रीप्रकाश कमेटी और गवर्नमेंट ने इस बात को ख्याल में रखा है कि जब तक हिन्दी का राष्ट्रीयकरण स्वरूप व्यवहार द्वारा निश्चित नहीं हो जाता, तब तक उसके स्वरूप के सम्बन्ध विवाद और मतभेद बना रहेगा ?

श्री राज बहादुर : हिन्दी का अपना स्वरूप है, विकास तो हर एक भाषा का होता है, हिन्दी का भी विकास निरन्तर होता रहेगा, इस सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये ।

Shri Bakar Ali Mirza: Will the hon. Minister be pleased to state whether any sample survey has been conducted in the Hindi regions of the country to find out how far the language policy is in conformity with the objective realities and how many people in the Hindi region really understand the language that is broadcast by AIR?

Shri Raj Bahadur: From time to time, this exercise has been undertaken, and that was why a committee of Members of Parliament was constituted as far back as 1962, and then there was the Sri Prakasa Committee. A review is also made from time to time. In fact, the Sri Prakasa Committee wrote about fifty letters to eminent Hindi and Urdu writers, scholars etc. to elicit their opinion. They expressed their satisfaction. The difficulty arises when a Sanskrit word is used for which, of course, there is no other alternative word in currency, and naturally, in such cases perhaps some technical concepts or technical

terms might be objected to, but that cannot be helped.

Shri Bakar Ali Mirza: I am not against Sanskrit words, but I want to know whether any sample survey has been undertaken.

Shri Raj Bahadur: There is listeners' research also.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : क्या सरकार बतलायेगी कि जब से इधर कुछ परिवर्तन हुआ है, आकाशवाणी के देहाती प्रोग्राम में बहुत कमी हो गई है और उसकी भाषा भी अशुद्ध हो गई है, जबकि उसके सुनने वालों में सैनिक, किसान, अन्न आदि उत्पादन करने वाले लोग अधिक होते हैं । मैं जानना चाहता हूं कि उनके कार्यक्रम क्यों बन्द किये गये हैं और उनकी भाषा क्यों भ्रष्ट की गई है ?

श्री राज बहादुर : मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि उनकी भाषा भ्रष्ट की गई है, देहाती प्रोग्राम ब्रज और हरियाणा की भाषा में होता है, उसके अन्दर कोई कमी हुई है, ऐसी मेरी कोई जानकारी नहीं है ।

श्री के० डी० मालवीय : इस कमेटी द्वारा मुख्य तौर पर 6 सिफारिशें दी गई हैं, क्या सरकार यह नहीं समझती कि इस कार्य में दो साल का समय लग गया, और आइन्दा जब इस तरह की कमेटियां सरकार बनाये तो समय का भी ध्यान रखे ताकि सिफारिशें जल्द से जल्द दी जायें और इतना समय न लगे ।

श्री राज बहादुर : जी नहीं, सिफारिशें उन्होंने दीं । उसके बाद कमेटी निरन्तर बैठी रही इस बात को देखने के लिये कि इन सिफारिशों पर कहां तक अमल हुआ है । जून 1964 में आकर पचास मुख्य-मुख्य लोगों को लिखा गया । उनकी जब सम्मति मालूम हुई उसके उपरान्त उन्होंने काम किया ।

श्री के० डी० मालवीय : क्या यह स्टैंडिंग कमेटी थी ।

श्री राज बहादुर : यह निश्चित पीरियड के लिये स्टैंडिंग कमेटी थी ।

Shri Hanumanthaiya: Does the hon. Minister keep in mind not only the requirements of the people in north India but also those of the people of south India in the matter of evolving this national language, Hindi? Many a time in north India, since Urdu is more familiarly used, Urduised Hindi is supposed to be the national language whereas to people of the four southern States of India who are more familiar with Sanskrit, Sanskritised Hindi would be acceptable.

Shri Raj Bahadur: Broadly speaking, the objective is to find out the maximum common measure of understandability and feasibility Sanskrit would no doubt provide the base for that.

Shri Bakar Ali Mirza: My question was not answered.

Shri Rajaram: I understand from his reply that the Committee has said that the Hindi used should be Sanskritised Hindi. Has the Committee thrown any light on the Dravidian languages and adopting words from those languages?

Shri Raj Bahadur: We will certainly persuade the protagonists of both Hindi and Dravidian languages to adopt as big a measure of common words as possible. Certainly Dravidian languages can also be the source for common words.

श्री शिव नारायण : मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि क्या इस कमेटी ने संस्कृत पर भी जोर दिया है और उर्दू हिन्दी की मिली हुई भाषा पर भी जोर दिया है । इस की रिकमेन्डेशन्स क्या हैं ।

श्री राज बहादुर : कमेटी की सिफारिशें मैं ने सदन की मेज पर रख दी हैं ।